
Himadri Vaibhavam Kedaranatha

—
हिमाद्रिवैभवं केदारनाथः
—

Document Information



Text title : Himadri Vaibhavam Kedaranatha

File name : himAdriVaibhavaMkedAranAthaH.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Kapiladeva Dwivedi

Proofread by : Mandar Mali

Translated by : Mandar Mali

Description/comments : Rashtragitanjali, Kapiladeva Dwivedi (Ed.)

Acknowledge-Permission: Kapiladeva Dwivedi, Vishvabharati Anusandhan Parishad, Varanasi

Latest update : May 1, 2020

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 31, 2020

sanskritdocuments.org



हिमाद्रिवैभवं केदारनाथः



(ख। श्रीकेदारनाथः)
(गीतिका) (मात्रासमक जाति)
जय जय जय हे जय केदार !
भारत सुषमा-गरिमाऽऽधार !
कीर्ति सुधा ते प्रतिपल-हृद्या,
मानस-पाप-नाश-सुमनोज्ञा ॥ जय० ॥

हैम-मण्डितो हिम गिरि-शोभं
सतत-हिमानी-सुषमा-हृद्यम् ।
हिमतति-पूतं-मनोरम-वेषं,
हैम-शान्ति-हत-मानस-क्लेशम् ॥ जय० ॥

देवागारमिदं सुपवित्रं
शैव-धर्म कृत-मूर्ति-गुणोच्चम् ।
शैव-मन्दिराऽऽहत जन-सङ्घं
केदाराऽऽश्रित-पावन-धामम् ॥ जय० ॥

शिल्पकला-गरिमोच्चय-पूर्णं,
सुन्दर-सुघटित हृषदभिरामम् ।
स्वर्णं शृङ्ग-मुकुटाश्रित-शोभं,
भक्ति-भावना-हत-जन-क्षोभम् ॥ जय० ॥

जाति-भेद-सदूषण-हीनं,
मानस-मान मोद-मति-लीनम् ।
आधि-व्याधि-भय-नाश-मनोज्ञं
शान्ति-सुधा सञ्चार सुहृद्यम् ॥ जय० ॥

मन्दाकिनि-जल-वेग-सुरम्यं
हैम-प्रपात-पात-अभिनन्द्यम् ।

गान्धि-सरोवर शोभा-रम्यं
मन्दाकिनि-जनिभूरतिहृद्यम् ॥ जय० ॥


मन्दाकिनि द्रोणो शुभ-रम्यं
देवदारु-सरलै- रतिहृद्यं, ।
गौरीकुण्डं मध्ये रम्यं
तप्तजलैर्हरते जन-श्रान्तिम् ॥ जय० ॥


पुष्पाणां परितो रुचिराभा
हरति श्रमं वितनोति मुदं च ।
शाङ्गल शोभित पूत-वनालि,
सरिता तुङ्ग-तरङ्ग-मनोज्ञम् ॥ जय० ॥

शान्ति-मुक्ति-सन्देश-प्रदाता,
आत्मिक-शक्ति-भक्ति-मति-दाता ।
ज्ञान भानु हत-भव-भय-शोकं,
शान्ति-सुधा-हृत-मानस-तापम् ॥ जय० ॥

विश्व शान्ति-सन्देश-सुशोभं,
विश्वप्रेम शुभ भाव-प्रणुन्नः ।
जगति ज्ञान-ज्योतिर् वितनोतु
हरतु पाप भवताप-समूहम् ॥ जय० ॥

Proofread by Mandar Mali

——
Himadri Vaibhavam Kedaranatha
pdf was typeset on May 31, 2020

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

